# अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करना

## अध्ययन निर्देशिका

अध्याय चार

# धर्मविज्ञान में अधिकार

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

## विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका ..... 3

नोट्स ..... 4

1. परिचय (0:24) ..... 4

2. मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म (2:14) ..... 4

A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (2:50) ..... 4

1. अभिप्रेरणा (3:24) ..... 4

2. अर्थ (5:25) ..... 5

3. अस्पष्टता (8:58) ..... 7

B. कलीसिया का अधिकार (10:56) ..... 7

1. भूतकालीन अधिकार (11:42) ..... 8

2. तत्कालीन मध्ययुगीन अधिकार (14:53) ..... 9

3. शुरूआती प्रोटोस्टेंटवाद (17:00) ..... 9

A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (17:39) ..... 10

1. अभिप्रेरणा (18:05) ..... 10

2. अर्थ (21:56) ..... 10

3. स्पष्टता (26:31) ..... 11

B. कलीसिया का अधिकार (31:52) ..... 13

1. भूतकालीन अधिकार (31:56) ..... 13

2. तत्कालीन प्रोटेस्टेंट अधिकार (38:35) ..... 15

4. आधुनिक प्रोटेस्टेंटवाद (41:17) ..... 15

A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (41:52) ..... 15

1. अभिप्रेरणा (42:06) ..... 15

2. अर्थ (46:11) ..... 17

3. स्पष्टता (51:25) ..... 19

B. कलीसिया का अधिकार (58:08) ..... 20

1. भूतकालीन अधिकार (58:36) ..... 20

2. अधुनिक प्रोटेस्टेंट अधिकार (1:02:50) ..... 22

5. उपसंहार (1:09:02) ..... 23

पुनर्समीक्षा के प्रश्न ..... 24

उपयोग के प्रश्न ..... 29


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

---

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

# नोट्स

## 1. परिचय (0:24)

## 2. मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म (2:14)

### A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (2:50)

मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों का एक बड़ा बहुमत कम से कम सैद्धान्तिक तौर पर पवित्रशास्त्र के अधिकार पर विश्वास करता था। परन्तु मध्यकालीन कलीसिया ने पवित्रशास्त्र के प्रति इस समर्पण के क्रियान्वयन को लगभग असम्भव बना दिया।

#### 1. अभिप्रेरणा (3:24)

धर्मविज्ञानियों ने पुष्टि की कि :

- बाइबल पूर्णत: परमेश्वर द्वारा अभिप्रेरित है
- बाइबल मानवीय माध्यमों द्वारा अस्तित्व में लाई गई।

धर्मविज्ञानियों ने पवित्रशास्त्र की मानवीय और ऐतिहासिक उत्पत्ति को अनदेखा कर पवित्रशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति पर जरुरत से अधिक बल दिया।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

धर्मविज्ञानी मसीही धर्मविज्ञान की श्रेणियों और प्राथमिकताओं के लिए यूनानी दर्शनशास्त्रों पर अत्यधिक निर्भर थे।

मध्यकालीन धर्मशास्त्रीय विद्वान् :

- बाइबल के इतिहास से अनजान थे
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का व्यावहारिक तौर पर ज्यादा लाभ नहीं उठा पाए।

## 2. अर्थ (5:25)

बाइबलीय अभिप्रेरणा का एक प्रमाण यह है कि पवित्रशास्त्र के पदों के बहुत से अर्थ हैं।

अगस्टीन का मानना था कि दिव्य अभिप्रेरणा के कारण बाइबल के पद एक से अधिक अर्थों से भरे हैं।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उत्कृष्ट बहुअर्थ : यह विश्वास कि धर्मशास्त्रीय पदों में अर्थ और मूल्य के बहुत से स्तर होते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से आते हैं।

जॉन कैसियन के क्वेड्रिगा के अनुसार बाइबल के प्रत्येक पद के चार विविध अर्थ होते हैं।

1. *शाब्दिक अर्थ* — पद का सामान्य या साधारण अर्थ

2. *रूपकीय अर्थ* — सैद्धान्तिक सत्यों के लिए पदों की रूपकों के रूप में व्याख्या

3. *नैतिक अर्थ* — नैतिक भाव, मसीही व्यवहार के लिए नैतिक मार्गदर्शन

4. *अनागोगीकल (भविष्य-संबंधी) अर्थ* — अन्तिम दिनों में दिव्य वायदों की पूर्ति

शाब्दिक या सामान्य अर्थ को एक गम्भीर धर्मविज्ञानी मनन के लिए निम्न स्तर का माना जाता था।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

### 3. अस्पष्टता (8:58)

बाइबल को एक ऐसी पुस्तक के रूप में देखा जाने लगा जो कि अत्यधिक अस्पष्ट थी :

- केवल उन लोगों को छोड़कर जिन्हें विशेष अलौकिक अन्तर्दृष्टि दी गई थी।

- जिनके पास बाइबल को पढ़ने की योग्यता और अवसर थे।

परमेश्वर ने वचन में अर्थ की बहुत सी परतें रखी थी जो सामान्य दृष्टि से छिपी हुई थीं।

बाइबल इतनी अस्पष्ट थी कि यह धर्मविज्ञानियों की अगुवाई करने में अयोग्य थी।

## B. कलीसिया का अधिकार (10:56)

क्योंकि बाइबल को अस्पष्ट माना जाता था, इसलिए धर्मविज्ञान में कलीसियाई अधिकार एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## 1. भूतकालीन अधिकार (11:42)

मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों ने यह निर्धारित करने के लिए कलीसियाई धर्मविज्ञान के इतिहास में देखा कि उन्हें क्या विश्वास करना चाहिए।

कलीसिया की भूतकालीन शिक्षा कम से कम दो रीतियों से मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों के लिए महत्वपूर्ण थी।

- प्रारम्भिक कलीसियाई अगुवों पर अत्यधिक ध्यान दिया गया।
    - सामान्यत: अचूक नहीं माना जाता था।
    - यह माना जाता था कि परमेश्वर ने इन भूतकाल के महान धर्मविज्ञानियों को विशेष अन्तर्दृष्टि प्रदान की थी

- कलीसिया की सार्वभौमिक सभाओं को बाइबल की शिक्षा का अखण्ड सार माना जाता था।

इस कलीसियाई सिद्धान्त को मानवीय अशुद्धिपूर्ण धर्मविज्ञान नहीं माना जाता था, बल्कि ऐसा धर्मविज्ञान जिस में पवित्रशास्त्र के समान अधिकार था।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## 2. तत्कालीन मध्ययुगीन अधिकार (14:53)

मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों का विश्वास था कि परमेश्वर ने जीवित अधिकारियों की एक प्रणाली को स्थापित किया है :

- कलीसिया के पुरोहित-तन्त्र में
- इसने अखण्ड शिक्षा उपलब्ध करवाई

कलीसिया का आधिकारिक पुरोहित-तन्त्र, न कि पवित्रशास्त्र, तत्कालीन धर्मविज्ञान के लिए अचूक मार्गदर्शक का काम करता था।

## 3. शुरूआती प्रोटोस्टेंटवाद (17:00)

कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों के बीच विवाद का मुख्य कारण अधिकार का प्रश्न था:

- बाइबल
- कलीसियाई अधिकार


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (17:39)

### 1. अभिप्रेरणा (18:05)

पवित्रशास्त्र की उत्पत्ति दिव्य और मानवीय दोनों थी।

पवित्रशास्त्र मानवीय उपकरणों और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के द्वारा आया।

पवित्रशास्त्र वास्तविक मानवीय अवस्थाओं से उठा, और उन्हें लोगों द्वारा विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिए लिखा गया।

### 2. अर्थ (21:56)

व्याख्याएँ धर्मशास्त्रीय पदों के शाब्दिक अर्थ पर आधारित किया थीं जो मानवीय लेखक अपने वास्तविक पाठकों तक पहुँचाना चाहते थे।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सुधारवादियों ने अपने अधिकांश कैथोलिक साथियों की तुलना में निरन्तर मानवीय लेखकों के इच्छित अर्थ पर कहीं ज्यादा बल दिया।

धर्मशास्त्रीय पदों के शाब्दिक या साधारण अर्थ पर प्रारम्भिक धर्म-सुधार धर्मशास्त्रीय पदों के शाब्दिक या साधारण अर्थ पर दिया गया बल 15वीं सदी के पुनर्जागरण की व्याख्याशास्त्रीय विधि  के समानांतर था :

- कलीसियाई निगरानी से मुक्त प्राचीन अवधि के प्राचीन लेखों को समझना।
- इन लेखों की उनके लेखकों के इच्छित अर्थ के अनुरूप व्याख्या करना।

पुनर्जागरण के दौरान इब्रानी और यूनानी बाइबल के नये संस्करण भी प्रकाशित किए।

### 3. स्पष्टता (26:31)

सुधारवादियों ने तर्क दिया कि बाइबल समझने योग्य थी।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बाइबल की स्पष्टता के प्रोटेस्टेन्ट सिद्धान्त में कुछ तत्वों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया :

- चलायमान छापाखाने के विस्तृत प्रयोग ने अधिक से अधिक संख्या में बाइबलों को उपलब्ध करवाया।

- साहसी अग्रणियों ने पवित्रशास्त्र का साधारण लोगों की भाषाओं में अनुवाद करना शुरू किया।

- धर्म-सुधार आन्दोलन के शाब्दिक अर्थ पर बल ने धर्मविज्ञानियों को अपनी व्याख्याओं को जाँचने एवं परखने योग्य आधार देने के योग्य बनाया।

बाइबल के कुछ भाग दूसरों से अधिक स्पष्ट हैं।

मध्यकालीन कलीसिया के विपरीत प्रोटेस्टेन्ट सुधारवादियों ने बाइबल को कलीसिया के अधिकार के ऊपर ठहराया।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## B. कलीसिया का अधिकार (31:52)

कलीसियाई धर्मविज्ञान में बहुत अधिक अधिकार है, परन्तु पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के अधीन था।

### 1. भूतकालीन अधिकार (31:56)

आरम्भिक प्रोटेस्टेन्ट सुधारवादियों ने इन्हें काफी अधिकार प्रदान किया :

- कलीसियाई अगुवों (चर्च फादर्स) की शिक्षाओं को
- कलीसिया की आरम्भिक सभाओं (परिषदों) को

सोला स्क्रिप्चरा :

- **नहीं** "बाइबल के अधिकार कोई और अधिकार नहीं"
- **बल्कि "**बाइबल ही है जिस पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता।**"**


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

"सर्वोच्च न्यायी, जिसके द्वारा धर्म के सारे विवादों का निर्धारण, और सभाओं के सारे निर्णयों, प्राचीन लेखकों के विचारों, मनुष्यों के सिद्धान्तों, और निजी आत्माओं की जाँच की जाती है, और जिसके निर्णय में हमें विश्राम पाना है, वह कोई और नहीं पवित्रशास्त्र में बात करने वाला पवित्र आत्मा है।"
*(वेस्टमिन्स्टर विश्वास अंगीकार 1.10)*

परन्तु *सोला स्क्रिप्चरा* के सिद्धान्त पर बल देने के साथ सुधारवादियों ने भूतकाल को नहीं नाकारा।

काल्विन के शब्दों में कई महत्वपूर्ण विचार प्रकट होते हैं :

- कलीसिया की सभाओं को ऐतिहासिक रूप से समझने की आवश्यकता है।

- कलीसिया की शिक्षाओं को अन्ततः पवित्रशास्त्र के प्रकाश में परखा जाना चाहिए।

- लम्बे समय से चली आ रही, कलीसिया की प्राचीन खोजों को हमारे अन्तरिम या प्रारम्भिक निर्णयों के रूप में तब तक स्वीकार किया जाना चाहिए जब तक धर्मशास्त्रीय उन्हें गलत साबित न करे।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

### 2. तत्कालीन प्रोटेस्टेंट अधिकार (38:35)

आरम्भिक प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों ने कलीसिया के उचित रूप से नियुक्त शिक्षकों के अधिकार को उच्च सम्मान दिया।

मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण अधिकार की ऐसी संरचनाओं के अलावा व्यक्तियों या समूहों का कार्य नहीं था।

"सुधारवादी कलीसिया सर्वदा सुधार करती है" — कलीसियाई अधिकार सर्वदा पवित्रशास्त्र की छानबीन के अधीन होने चाहिए।

## 4. आधुनिक प्रोटेस्टेंटवाद (41:17)

### A. पवित्रशास्त्र का अधिकार (41:52)

#### 1. अभिप्रेरणा (42:06)

*औपन्यासिक*

- प्रक्रिया :
  - परमेश्वर ने बाइबल लेखकों को प्रेरित किया।
  - परमेश्वर ने उनके लेखनों का अधीक्षण नहीं किया।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- पवित्रशास्त्र

    - केवल मनुष्यों का मत है।
    - में चूक हो सकती है।
    - में कलीसिया पर पूर्ण अधिकार की कमी है।

*यांत्रिक* ("श्रुतिलेख अभिप्रेरणा")

- प्रक्रिया :
    - बाइबल लेखक निष्क्रिय थे।
    - बाइबल का लेखक स्वयं परमेश्वर है।

- पवित्रशास्त्र
    - अब इसका निर्धारण तथा पालन नहीं किया जा सकता।
    - अब धर्मविज्ञान में यह हमारा सर्वोच्च अधिकार स्रोत नहीं है।

*सुव्यवस्थित*

- प्रक्रिया :
    - परमेश्वर ने बाइबल के लेखकों को लिखने के लिए प्रेरित किया।
    - परमेश्वर ने उनके लेखन का अधीक्षण किया जिससे जो कुछ उन्होंने लिखा वह अचूक तथा अधिकृत था।
    - परमेश्वर ने उनके निजी विचारों, उनकी प्रेरणाओं, उनकी भावनाओं या उनके धर्मविज्ञान को दरकिनार नहीं किया।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- पवित्रशास्त्र :
    - उच्च मानवीय, सांस्कृतिक रूप से परिष्कृत पदों में अटल सत्य।
    - हर काल के लिए बाध्यकारी परन्तु इसकी शिक्षाएँ विशेष परिस्थितियों के सन्दर्भ से बंधी हैं।

सुव्यवस्थित अभिप्रेरणा का सुधारवादी विचार सम्पूर्ण बाइबल के मानवीय तथा दिव्य, ऐतिहासिक एवं कालातीत गुणों पर बल देता है।

## 2. अर्थ (46:11)

- *आधुनिक बहुअर्थ*

आमतौर पर मानवीय भाषा की अस्पष्टताओं पर आधारित होता है।

धर्मशास्त्रीय पद्यांश खाली पात्र हैं जिन्हें व्याख्याकार अर्थ से भरते हैं।

यह मानवीय व्याख्याकारों को पवित्रशास्त्र में अपने स्वयं के विचार भरने का अधिकार देने के द्वारा पवित्रशास्त्र के अधिकार को व्यर्थ ठहराता है।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- *साधारण एकार्थ*

  पवित्रशास्त्र के प्रत्येक पद्यांश का केवल एक अर्थ है।

  इनकार करता है कि वह एकमात्र अर्थ पेचीदा हो सकता है।

- *बहुस्तरीय (पेचीदा) एकार्थ*

  "जब किसी वचन के सही या गलत अर्थ के बारे में सन्देह हो (जो बहुअर्थी नहीं परन्तु एक है), तो इसे अन्य स्थानों पर खोजकर जानना चाहिए जहाँ वचन ज्यादा स्पष्ट है।" *(वेस्टमिन्स्टर विश्वास अंगीकार 1.9)*

  यह दृष्टिकोण पुष्टि करता है कि

  - प्रत्येक पद्यांश का एक अर्थ है जो पेचीदा और बहुस्तरीय है।

  - बाइबल एक अधिकृत अर्थ के लिए हमारा इन्तज़ार नहीं करती बल्कि स्वयं उसे प्रस्तुत करती है।

  प्रत्येक वचन उसकी व्याख्या करने के हमारे सर्वोत्तम प्रयासों के ऊपर अधिकृत है।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## 3. स्पष्टता (51:25)

*पूर्ण अस्पष्टता*

- बाइबल पूर्णत: अस्पष्ट या हमसे छिपी हुई है।

- अन्य साहित्यों के समान बाइबल विरोधाभासी तथा स्व-पराजित है।

*पूर्ण स्पष्टता*

- लगभग पूरा पवित्रशास्त्र इतना स्पष्ट है कि वे उसे जल्दी और आसानी से समझ सकते हैं।

- ऐसे विचारों के समर्थक उन सभी व्याख्याओं को एकदम नकार देते हैं जो उनके बहुत संकीर्ण मसीही समुदायों से न हों।

*स्पष्टता के स्तर*

- जो उद्धार के लिए आवश्यक है वह किसी एक या दूसरे स्थान पर स्पष्ट है

- पवित्रशास्त्र में सब कुछ समान रूप से स्पष्ट नहीं है।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र का प्रत्येक भाग अखण्डनीय रूप से अधिकृत है, लेकिन हम इसके अधिकृत मार्गदर्शन को विविध स्तरों में ग्रहण करते हैं।

- धर्मशास्त्रीय शिक्षा के बहुत से पहलूओं को समझने के लिए विद्वतापूर्ण प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है।

- पवित्रशास्त्र के कुछ पहलूओं के बारे में केवल गम्भीर विद्यार्थियों को पता होता है

- चाहे हम कितना भी विद्वानीय प्रयास करें बाइबल के कुछ पद अस्पष्ट रहते हैं।

## B. कलीसिया का अधिकार (58:08)

### 1. भूतकालीन अधिकार (58:36)

*परम्परावाद*

- पवित्रशास्त्र के अधिकार की पुष्टि करता है।

- कैथोलिकवाद की परम्पराओं को अस्वीकार करता है।

- परन्तु भूतकाल के सुधारवादी धर्मविज्ञान को जाँचने में असफल हो जाता है।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

*धर्मशास्त्रीयवाद या बाइबलवाद*

- इस प्रकार कार्य करते हैं मानो प्रत्येक मनुष्य को भूतकालीन प्रोटेस्टेन्ट परम्परा की सहायता के बिना बाइबल के आधार पर प्रत्येक धर्मविज्ञानी मामले का निर्णय करने की आवश्यकता हो।

- यह परमेश्वर के आत्मा द्वारा कलीसिया को दी गई बुद्धि को अनदेखा करता है

- यह धर्मविज्ञानी निर्णय केवल उन व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों को प्रदान करता है जो वर्तमान में कार्यरत हैं।

*सेम्पर रिफोर्मान्डा*

- अन्तरिम निर्णयों के रूप में स्वीकार करें
    - कलीसियाई अगुवों (फादर्स) तथा सभाओं (कौंसिल्स) को
    - सुधारवादी विश्वास अंगीकारों तथा परम्पराओं को

- भूतकाल के अधिकारों को सर्वदा पवित्रशास्त्र के अखण्डनीय शिक्षा के अधीन होना चाहिए।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## 2. अधुनिक प्रोटेस्टेंट अधिकार (1:02:50)

- *संदेहवाद*

  कुछ सुधारवादी धर्मविज्ञानी आज की सैद्धान्तिक व्यवस्थाओं के बारे में सन्देहपूर्ण होते हैं।

- *सिद्धान्तवाद*

  अन्य लोग हमारे समय की सैद्धान्तिक व्यवस्थाओं के बारे में सिद्धान्तवाद की ओर चले जाते हैं।

- *विश्वासयोग्यता*

  प्रमाणिक सुधारवादी धर्मविज्ञान का मार्ग "आधुनिक सैद्धान्तिक व्यवस्थाओं में विश्वासयोग्य" बनने का प्रयास करना है।

*दोहरी* — सन्देह और सिद्धान्तवाद के अस्तित्व का आंशिक कारण यह है कि सैद्धान्तिक कथनों को अक्सर सही या गलत के रूप में देखा जाता है।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

*श्रेणीगत* — सैद्धान्तिक कथनों के सत्य के महत्व सत्य और झूठ के बीच फैली हुई संभावनाओं की श्रृंखला के रूप में पाए जाते हैं।

सभी धर्मविज्ञानी कथन कम या ज्यादा सत्य या झूठ होते हैं, इस बात के आधार पर कि वे पवित्रशास्त्र की अचूक शिक्षा को कितनी निकटता से प्रतिबिम्बित करते हैं।

- कुछ धर्मविज्ञानी कथन सत्य के रूप में स्वीकार किए जाने के बहुत निकट होते हैं।

- अन्य धर्मविज्ञानी आधार पवित्रशास्त्र की शिक्षा से इतने दूर हैं कि उन्हें गलत ठहराना उचित है।

सारी धर्मविज्ञानी व्यवस्थाओं को सुधारा जा सकता है (*"सेम्पर रिफोर्माण्डा,"* सर्वदा सुधारने वाली)

आधुनिक सुधारवादी धर्मविज्ञान का लक्ष्य विश्वासयोग्य धर्मविज्ञानी व्यवस्थाओं को उत्पन्न करना है।

## 5. उपसंहार (1:09:02)


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. अभिप्रेरणा, अर्थ और अस्पष्टता के आधार पर मध्यकालीन कलीसिया के उस दृष्टिकोण का वर्णन करें जो उसने पवित्रशास्त्र के अधिकार के विषय में लिया।

2. स्पष्ट करें कि किस प्रकार मध्यकालीन धर्मविज्ञानियों ने भूतकाल में और अपनी समकालीन परिस्थिति में कलीसिया के अधिकार को समझा।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मध्यकालीन युग के पवित्रशास्त्र और कलीसिया के अधिकार के दृष्टिकोण के क्या प्रभाव पड़े?

4. अभिप्रेरणा, अर्थ और अस्पष्टता के आधार पर आरंभिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों के उस दृष्टिकोण का वर्णन करें जो उन्होंने पवित्रशास्त्र के अधिकार के विषय में लिया।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. स्पष्ट करें कि किस प्रकार आरंभिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों ने भूतकाल में और अपनी समकालीन परिस्थिति में कलीसिया के अधिकार को समझा।

6. आरंभिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों के पवित्रशास्त्र और कलीसिया के अधिकार के दृष्टिकोण के क्या प्रभाव पड़े?


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. अभिप्रेरणा, अर्थ और अस्पष्टता के आधार पर आधुनिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों के उस दृष्टिकोण का वर्णन करें जो उन्होंने पवित्रशास्त्र के अधिकार के विषय में लिया।

8. स्पष्ट करें कि किस प्रकार आधुनिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों ने भूतकाल में और अपनी समकालीन परिस्थिति में कलीसिया के अधिकार को समझा।


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. आधुनिक प्रोटेस्टेंट मसीहियों के पवित्रशास्त्र और कलीसिया के अधिकार के दृष्टिकोण के क्या प्रभाव पड़े?


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## उपयोग के प्रश्न

1. आरंभिक कलीसियाई अगुवों (फादर्स) ने संपूर्ण इतिहास में कलीसिया को प्रभावित किया है। यह अच्छा है या बुरा? क्या आधुनिक धर्मविज्ञान को इन पुराने दृष्टिकोणों से आगे बढ़ जाना चाहिए? या हमें उनकी बुद्धि पर निरंतर निर्भर रहना चाहिए जो हमसे पहले जा चुके हैं?

2. इस अध्ययन ने किस प्रकार आपको कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट मसीहियों के बीच के ऐतिहासिक विवाद को समझने में सहायता की है?

3. पवित्रशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति और पवित्रशास्त्र की मानवीय उत्पत्ति के बीच एक संतुलन को बनाए रखना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. ऐसे कुछ व्यावहारिक तरीके कौनसे हैं जिनमें हम आधुनिक कलीसिया में "सर्वदा सुधार होने वाले" सिद्धांत को लागू कर सकते हैं? आपकी कलीसिया में कुछ ऐसे क्षेत्र कौनसे हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है?

5. जब हम आधुनिक धर्मविज्ञानी विचार-विमर्श में कार्यरत होते हैं तो पेचीदे एकार्थ का भाव हमें कैसे प्रभावित करता है? अर्थ के प्रति इस दृष्टिकोण के क्या-क्या खतरे हैं? इसके कौन-कौनसे लाभ हो सकते हैं?

6. निश्चितता के शंकु का मॉडल किस प्रकार पवित्रशास्त्र के उन अनुच्छेदों में जो पूरी रीति से सपष्ट नहीं है आपको प्राथमिकताओं को प्रदान करने और आपके ज्ञान में भरोसे के स्तरों को प्रदान करने में सहायता कर सकता है?

7. परम्परावाद और धर्मशास्त्रीयवाद (बाइबलवाद) के क्या खतरे हैं? क्या आपने आज कलीसिया में इन उग्र विचारों को देखा है?

8. इस अध्याय में कई "उग्र" दृष्टिकोणों का उल्लेख किया गया है। क्या इनमें से कोई धर्मविज्ञान के प्रति आपके अपने दृष्टिकोण का वर्णन करता है? कौनसे? और अधिक जिम्मेदार नजरियों को ग्रहण करने के लिए आप कौनसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?

9. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?


© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org